अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

प्राक्कथन

(१) प्रथम अध्याय - श्री उदयशंकर भट्ट : व्यक्तित्व एवं कृतित्व १ से ४३ तक

१.१ जीवन परिचय -

१- जन्म

१.२ व्यक्तित्व परिचय -

(अ) (१) अंतरंग एवं बहिरंग पहलू (२) स्वतंत्र पहचान रखनेवाले भट्टजी (३) मिलनसार एवं दृढ (४) दिखावेसे दूर (५) स्वाभिमानी (६) स्वागतोत्सुक (७) संवेदनशील एवं भावूक - कलाकार (८) प्रकृति प्रेमी (९) निर्मल एवं सरल स्वभाव (१०) व्यवस्था प्रिय (११) हितैषी (१२) प्रगतिशील विचारक (१३) यायावरी (१४) राष्ट्र प्रेमी (१५) सहृदय साहित्यकार

(ब) बहिरंग व्यक्तित्व --

१.३ श्री उदयशंकर भट्टजी का कृतित्व --

१.३.१ काव्यकृति --

(१) तक्षशिला (२) राका (३) विसर्जन (४) मानसी (५) अमृत और विष (६) पूर्वापार (७) कौन्तेयकथा (८) विजय पथ (९) इत्यादि (१०) अन्तर्मंथन चारचित्र (११) मुझमें जो शेष है (१२) कणिका ।

१.३.२ नाटक -

(अ) पौराणीक नाटक (१) विद्रोहिणी अम्बा
(२) सगर विजय ।

(आ) ऐतिहासिक नाटक (१) विक्रमादित्य ।
(२) दाहर अथवा सिंध पतन
(३) मुक्तिदूत (४) शक विजय ।

(इ) सामाजिक एवं समस्या मूलक नाटक --
(१) कमला (२) अन्त हीन अन्त (३) पार्वती
(४) नया समाज ।

(ई) राजनीतिक नाटक (१) क्रान्तिकारी ।

(उ) गीतिनाटय,भावनाटय एवं पदनाटय --
(१) अशोक वन बन्दिनी (२) सन्त तुलसीदास
(३) गुरू द्रोण का अन्तर्निरीक्षण(४)अश्वत्थामा
(५) एकता चलोरे (६)नहुष निपात
(७) मत्स्यगन्धा(८)विश्वामित्र (९)राधा ।

(ऊ) एकांकी -- (१) अभिनव एकांकी (२) आदिम युग
(३) स्त्री का हृदय (४) आज का आदमी
(५)पर्दे के पीछे (६)नई बात (७)विश्वामित्र और दो
भाव नाटय (८) कालिदास (९)समस्या का अन्त
(१०) धूमशिखा (११) अंधकार और प्रकाश ।

(ए) उपन्यास --(१) एक नीड दो पंछी (२) नयामोड
(३) लोक-परलोक (४) शेष-अशेष
(५) सागर लहरें और मनुष्य (६) दो अध्याय ।

(ऐ) निबंध तथा अन्य स्फुट रचनाएँ --

पृष्ठ क्रमांक

(२) द्वितीय अध्याय - " सागर, लहरें और मनुष्य" उपन्यास में ५५ से ७३ तक
आँचलिकता ।

२.१ परिभाषाएँ -

अ) उत्पत्ति कोश - (१) हलायुध कोश,
(२) संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी
(३)आदर्श हिन्दी संस्कृत कोश
(४) डॉ.आदर्श सक्सेना ।

आ) अंग्रेजी कोश - (१) ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी,
(२) अमेरिकन कॉलेज इनसायक्लोपीडिया ।

ई) हिन्दी शब्द कोश (१) हिन्दी शब्द सागर
(२) मानक हिन्दी कोश (३)प्रामाणिक हिन्दी
कोश (४) भाषा शब्द कोश
(५)पदमचंद्र कोश (६) लघुत्तर हिन्दी शब्द सागर
(७) हिन्दी राष्ट्रभाषा कोश ।

२.२ अंचल उपन्यास के सन्दर्भ में --
(१) डॉ.ज्ञानचंद गुप्त (२) डॉ.रामदरश मिश्र
(३) डॉ.गणपति चंद्रगुप्त(४) डॉ.हरदयाल
(५) डॉ.विश्वम्भरनाथ उपाध्याय
(६) डॉ.रामगोपाल सिंह चौहान
(७)श्री प्रकार बाजपेयी(८)डॉ.लक्ष्मीकांत सिनहा
(९) डॉ.कान्तिवर्मा (१०)डॉ.सत्यपाल चुघ
(११) सीताराम चतुर्वेदी (१२)डॉ.सुमित्रा त्यागी
(१३)धनंजय वर्मा (१४)राधेश्याम कौशिक
(१५)डॉ.आदर्श सक्सेना ।

२.३ आँचलिकता : ग्रामीण ? या शहरी ?
(१) महेन्द्र चतुर्वेदी(२) डॉ.कान्ति वर्मा
(३) डॉ.आदर्श सक्सेना ।

२.४ आँचलिक उपन्यास के प्रकार --

२.५ आँचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ

२.६ 'सागर, लहरें और मनुष्य' उपन्यास में आँचलिकता -

(१) सीमित भौगोलिक परिवेश का अंकन या कथानक का आँचलिक आधार,

(२)लोक संस्कृति या अंचलकी संस्कृति का चित्रण,

(३)धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्सव पर्व,

(४) नारियल पूर्णिमा(५)होली,(६)सांस्कृतिक स्वरूप

(७)अंचल की राजनीतिक और धार्मिक स्थिति का चित्रण(८)राजनीतिक चित्रण (९)प्रकृति चित्रण या भौगोलिक परिवेश का अंकन,

(१०)पात्रों के चरित्र विकास में अंचल का योग

(११)नायक के रूप में अंचल का चित्रण एवं महत्व

(१२)भौगोलिक परिवेश में विद्यमान पिछडापन

(१३)समस्याओं में विद्यमान पिछडापन

(१४)अलग-अलग पहचान रखनेवाला समाज

(१५)जीवनानुभूति को महत्व

(१६)वास्तववादी और उदारवादी दृष्टिकोण

(१७)विशिष्ट कोटि का जनजीवन

(१८)वैज्ञानिक सभ्यता । विकास एवं सुधार का अभाव

(१९)स्थानीय बोली एवं भाषा को महत्व ।

(३) तृतीय अध्याय - 'सागर, लहरें और मनुष्य' उपन्यास की तत्वों के १५ से ११२ तक आधार पर समीक्षा ।

३.१ कथावस्तु -

(१) स्थानीय भाषा (२) मराठी मिश्रित हिन्दी

(३) अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी(४)गुजराती मिश्रित हिन्दी

(५)बम्बईया हिन्दी (६) शुध्द हिन्दी भाषा का प्रयोग

(७)भौगोलिक परिवेश(८)अपरिचित समाज का चित्रण
(९)आँचलिक पात्र (१०)पात्रों की मानसिकता
(११) जीवनानुभूति (१२)आँचलिक संस्कृति का चित्रण
(१३)कथावस्तु में एकरुपता नहीं ।
(१४) जीवन दर्शन (१५) अंचल की अनिवार्यता ।

३.२ पात्र या चरित्र चित्रण --
(१) चरित्र - चित्रण --
अ) वर्णनात्मक प्रणाली
ब) विश्लेषणात्मक प्रणाली
क) नाटकीय प्रणाली
(२) चरित्र चित्रण की विशेषताएँ --
(३) उपन्यास में चित्रित प्रमुख एवं गौण पात्र
अ) प्रमुख पात्र (१) रत्ना (२) यशवंत (३) माणिक
(४) विट्ठल एवं वंशी (५) नाना हीरा
(६) मनोहर सरिका (९) डॉ.पांडुरंग
ब) गौण एवं प्रासंगीक पात्र --(१) शेकर
(२) एक मल्लाह (३) रंगनाथ (४) रामचंद्र
(५) एक दो इसाई कोली (६)बुढिया ।
(४) चरित्र चित्रण --

३.३ कथोपकथन

३.४ देशकालवातावरण --(१) धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्सव पर्व
(२) नारियल पूर्णिमा (३) होली
(४) सांस्कृतिकस्वरुप ।

३.५ भाषा

३.६ शैली

३.७ शीर्षक

३.८ उद्देश्य

पृष्ठ क्रमांक

(४) चतुर्थ अध्याय - " सागर, लहरें और मनुष्य " उपन्यास 113 से 130 तक
में चित्रित समस्याएँ "

प्रस्तावना

४.१ व्यावसायीक समस्या --

प्राकृतिक एवं व्यावसायीक बाधा

(१) तूफान (२) शीत गृह की कमी

(३) यातायात का अभाव (४) व्यावसायीक ईर्ष्या

(५) अशिक्षा (६) व्यवसाय के लिए उपयुक्त साधनों की कमी (७) ग्राहक की कमी (८) सहायक की आवश्यकता (९) दलालो द्वारा शोषण ।

४.२ आर्थिक समस्या- (१) रोजगार (२) वेश्या समस्या ।

४.३ प्रेमविवाह की समस्या --(१) विरोध

(२) जातीय संस्कार (३) आर्थिक कारण

(४) असफलता (५) बाह्य आकर्षण

(६) मनका मेल न होना (७) शारीरिक आकर्षण समाप्त होना ।

४.४ अवैध यौन सम्बन्ध - (१) जातीय संस्कार

(२) अर्थाभाव ।

४.५ जातीयवाद की समस्या (१) वैवाहिक सम्बन्ध

(२) राजनीति में जातिवाद (३) नौकरी व्यवसाय में जातिवाद ।

४.६ राजनीतिक समस्या -(१) नेताओं की स्वार्थी मनोवृत्ति (२) राजनीतिक जागरण ।

४.७ शैक्षणिक समस्या --

अ) शिक्षा प्राप्ति के कारण उत्पन्न समस्याएँ --

(१) निर्णय क्षमता का अभाव

(२) भौतिक सुविधा की बढती लालसा ।

पृष्ठ क्रमांक

ब) शिक्षा अभाव के कारण उत्पन्न समस्याएँ

(१) व्यापारियों द्वारा ठग जाना

(२) विचारों का दायरा सीमित

(३) शिक्षा विकास के मार्ग की बाधा ।

क) शिक्षा प्राप्त न करने के कारण --

(१) जातीय संस्कार

(२) बच्चों का काम में हाथ बटोरना ।

ड) शिक्षा प्रसार के प्रयत्न ।

४.८ सुधार की दिशा ।

(५) पंचम अध्याय - उपसंहार । 131 से 132 तक

संदर्भ ग्रंथ सूची ।